

वसुधा नायकः॥

ॐ नमो श्री वसुधा नायके ॥ ॥ श्री वसुधा नायक माह ॥ क्रापां वसुधा ना
मंडल थाय अष्टांग विहितं मंदल उयक पूर्ण कल स थापना याय पुंचा
मृत पंचनल ल उहपल पंचविहि पंचगंध पंचयल्लव अष्टसगंध थ
नतया उ विधि पूर्वक त थापना याह पूजा ॥ ॥ क्रापांगु न मंडल पंच
गव्य सिक्त तयक तिस माधि कृष्ण धिवासन वसुधा नाद की पूजा म सु
ल पूजा ॥ रावना ॥ स्वरावसुद्धा ३ आदि ॥ त ना स्थाय स्व हृदि पंका न न प
प्रं ॥ तद्वय निष्ठा मन चंद्र मंडल चंद्र मंडल लाय वि लूका नक्ष रुद्र घट रुद्र

DM

284
3

धर्म रत्न व आचार्य सुरत श्री महा बहार

घटपनिष्ठा मन्त्री वसुधा नाह गवत्यास्मानं लावयन् ॥ दितुं जं पीत वस्त्रं
 मेकमूर्तं नलमकृत् ललितसतनं वनद दक्षिणं वामं हृदयं सर्वलंका न
 विरुचिर्गं लावयन् ॥ ॥ धूप ॥ हगवन्ध्याद्यादि ॥ पायादि ॥ ओं वूं ३ ॥
 वसुधा नाहं उर्कं उर्कं वर्षा प्रवर्षनी निव्यादसि वसुधा नाह दानकाय
 पायाद्याचिमहं प्रोक्तमहं प्रगिक स्वाहा ॥ ॥ ऊर्कं वंहा ॥ ॥ स्नान
 मधुल उयकं गवजा सतय ॥ ओं धी ३ वसुधा नाह मधुल सर्वविद्या नत्स्नानयर्कं
 स्वाहा ॥ ॥ मधुल सस्नान वाय ॥ ओं वसुधा न वसु वृद्धि पातय वसुधने

स्वाहा ॥ ओं वूं वूं वसुधने स्वाहा ॥ ओं महालक्मी रूत न वासि न स्वाहा
 ओं वज्रधनसाग न निर्धायाय तथा गताय वज्रपुष्पं प्रगिक स्वाहा ॥ पूर्व
 व्यावलाकि नं धनायर्कं स्वाहा ॥ दक्षिणं ॥ ओं वज्रपाथीय जसनाधिपतयर्क
 हा ॥ वामं ॥ ओं वूं ला देवीय स्वाहा ॥ अग्ने ॥ ओं वनूधनागधिपतय स्वाहा ॥ नस्य
 वामं ॥ ओं जं हलजल जाय स्वाहा ॥ नस्य दक्षिणं ॥ ओं चिविकुलित्ये स्वाहा ॥ अग्ने
 ॥ ओं कलिमालित्ये स्वाहा ॥ नेम ॥ ओं मूर्धवंदाय स्वाहा ॥ वायू ॥ ओं चलंदाय स्वा
 हा ॥ वूं वूं ॥ ओं गुफादेवी स्वाहा ॥ पू ॥ ओं सगुफादेव्ये स्वाहा ॥ द ॥ ओं सनस्व स्तोत्रा

३ ओं वंद्याय स्वाहा स्वाहा ॥

हा ॥ प ॥ ओं वंद्याय स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं मासि हृदाय स्वाहा ॥ पू ॥ ओं पूर्ण हृदाय स्वा
हा ॥ द ॥ ओं धनंदाय स्वाहा ॥ प ॥ ओं वैद्य मन्त्राय स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं वंद्यादिलाक
पालंवाया ॥ ओं यन्त्रां मम सर्वमस्तानां च सर्वधनं धाम्य हि न ह्यसर्वं निध
नानि दही ददाय स्वाहा ॥ पूत मध्य ॥ यंचय हान पूजा ॥ पूष्य मास ॥ ५
पैलां ये मु ॥ कल्यादिगन विधिना यत्रि वथ मानायां धनयामि विविध
जल शुवर्ण मया पूर्ण कर्त्तुं हवत सह सेव सर्वं तां सर्वलाक ऊन न
मामि हृग्णा ॥ गर्वन ॥ जायः रुना मुका द रुना ॥ ॥ थं लि

दका धर्मदनक ॥ मन्त्र पूजा विसर्जन ॥ शिष्या शिवासन यंच गन्ध
मंशुल धानक ॥ ॥ ओं वज्र लख मूल खरुं ॥ मंजुल थिलक ॥ ॥
गुमं हनं हान चर्या विस्वधकं समं तरुद वाचायं ताख मंशुल मूल मे ॥
मंजुल ससाइ इनं हायक ॥ ओं शी यं कवि धनक वी धाम्य कवि आगळा गळ
माहावी स्वाहा ॥ ओं महाल श्री रत्न निवाशिना य श्री वसुधना रक्ता न काय
अर्घ्य प्रणीत स्वाहा ॥ ॥ मुक्ति ॥ अचि गुणोदय स सिद्धि सदा मन क न ल
गुस मृद्धि काचनं आसा पूर्ण मस्तिंग हय मंशुल नमस्तु श्री वसुधना वही सदाः

॥ मंथुलसस्वानुयकं गवता सतय ॥ ॥ ॐ वसूधनामंथुलचंडा
कविमलं स्वाहा ॥ ॐ सर्वविघ्नान्स्वानुयहं ॥ ॥ स्वानुयक ॥ ॐ वसू
धनं वंशुवृद्धिपातय वसूधनां स्वाहा ॥ ॐ हूं वसूधनां स्वाहा ॥ ॐ महाल
क्ष्मीरुतनिवासिनं वसूधनां स्वाहा ॥ मध्य ॥ ॐ वरुधनसागननिर्घायाय न
थागताय वरुपूष्यं प्रतिक्रि स्वाहा ॥ पूर्व ॥ ॐ आर्यावलाकिनं वनाय वरुप
ष्यं प्रतिक्रि स्वाहा ॥ स्वडास ॥ ॐ आर्य वरुपासिय वरु ॥ ॐ डास ॥ ॐ
वीय वरु ॥ ॐ डास ॥ ॐ ऊरुलजलंडाय स्वाहा ॥ स्वककु ॥ ॐ श्रीरुः ॥

नागनाजाय स्वाहा ॥ ऊडाकां ॥ ॐ श्रीगुफाय स्वाहा ॥ स्वथकुं ॥ ॐ
नाय स्वाहा ॥ ऊकां ॥ ॐ सनस्वये स्वाहा ॥ ऊथकुं ॥ ॐ श्रीचंडका
॥ ऊककुं ॥ ॐ मानिरुडाय स्वाहा ॥ ऊन ॥ ॐ पूर्णरुडाय स्वाहा ॥ स्व ॥ ॐ
न्यंडाय स्वाहा ॥ थन ॥ ॐ वैश्रवनाय स्वाहा ॥ ऊ ॥ ॐ विविकुंजलीय स्वाहा
॥ स्व ॥ ॐ कलीमालिये स्वाहा ॥ स्थान ॥ ॐ मूरुंडाय स्वाहा ॥ ऊथ ॥ ॐ वलंडा
ये स्वाहा ॥ ऊक ॥ ॐ श्रीमहालक्ष्मीरुतनिवासनीय स्वाहा ॥ दथ ॥ ॥
विधिर्धैयूजा ॥ ॥ कितनं सुनि ॥ ॥ कल्यादिनं विधिना पनियथ

माना याधनयामि विविधनत्त सर्वसुमया पूर्णकनाति हवनसह (येव
सर्वं तं लोकजननि पुत्रमामिह गुणं) ॥ मंडलसफलफलदक्ष
कायक ॥ किं सिद्धायक ॥ ॐ हगवती वसुधना भूत्वा दुषिणा वन शुव
नानिंदा कर्षयन् ॥ ॐ श्रीकैनिधन कनि धान्यकनी आगच्छा गच्छ श्रीं स्वाहा
॥ ॥ वतका २१ पा ज्ञतयास्यं काय ॥ वाक ॥ ॐ सन २ हन २ हगवन् ध
न २ समयमनूस्मन न ह २ ह २ स्वाहा ॥ ॥ ॐ आर्य श्रीवसुधना य
सती वाधग दधक वसुवास स स्वाहा ॥ मंडलसकाय ॥ गाय आ

जलसिद्धादा स्वां नस्यं मंडलसकास्यं वागास कस्कन सहायक वाक
ॐ उर्क २ शुर्क २ वर्षा सि प्रवर्षनी लिप्यादनी ० दानपति २ श्रीवसुध
वीयचनल कमल जूर्ध्वपति ह स्वाहा ॥ संखचाला पूजा ॥ ॐ संखधान
य पद्मधाननीय स्वाहा ॥ धनस्वां जलसि लंखन हास्यं विद्य ॥ मंडलसकी
नत ॥ ॥ ॐ वसुधना सदानत्वा दानिद नवगानती साधना पायिका
वज्रसा भूल मी सिद्धि वलपदा ॥ ॥ धनमंशुलस २१ ह ॥ किकि २ स्वां
वायक ॥ ॐ नमो नत्तुयाय गतसंजीव संलक्ष्मी फलरुक् दिग्मन्य श्री

वसुधानवसु. शिवंकवि. शंतिरुवि. समकार्य. सिद्धिकविस्वाहा॥ २१ ॥
पंचायचानपूजा॥ स्तुति॥ ॥ॐ नमोस्तुते महादेवी सर्वसिद्धिप्रदाय
स्ती नमोस्तुते महालक्ष्मी वसुधानवमोस्तुते॥ धनस्वाहा का आरायक॥
॥ नदथा॥ ॐ सोम नृपस्वाहा॥ ॐ दिव्य नृपस्वाहा॥ ॐ श्री हान नृपस्वाहा॥ ॐ
प्रह्लादा नमि नस्वाहा॥ ॐ श्री वरु सत्त्व हृदयाय स्वाहा॥ ॐ श्री सूर्य स्वस्वाहा॥
ॐ श्री सूर्य मति स्वाहा॥ ॐ श्री मंगल स्वाहा॥ ॐ श्री समंगल स्वाहा॥ ॐ
ल स्वाहा॥ ॐ श्री वल २ स्वाहा॥ ॐ श्री चपल स्वाहा॥ ॐ श्री उच्चार निस्वाहा

श्री उद्द निस्वाहा॥ ॐ श्री सप्तवती स्वाहा॥ ॐ श्री धनवती स्वाहा॥ ॐ धान्य
स्वाहा॥ ॐ श्री २ मति स्वाहा॥ ॐ श्री प्रह्ला मति स्वाहा॥ ॐ श्री मंगल स्वाहा॥
विमल स्वाहा॥ ॐ श्री नृम स्वाहा॥ ॐ श्री निर्मल स्वाहा॥ ॐ श्री मलनाशनी
हा॥ ॐ श्री सूर्य मल स्वाहा॥ ॐ श्री जूननं र स्वाहा॥ ॐ श्री विननं र स्वाहा॥ ॐ श्री
धिनन र स्वाहा॥ ॐ श्री विष्व क वि स्वाहा॥ ॐ श्री विष्णु र स्वाहा॥ ॐ श्री विस्वभ
षी स्वाहा॥ ॐ श्री विष्णु व नृप स्वाहा॥ ॐ श्री आवक्षनी स्वाहा॥ ॐ श्री आ कर्षनी स्वा
हा॥ ॐ श्री मंकुल स्वाहा॥ ॐ श्री मंकुल स्वाहा॥ ॐ श्री प्रहंकुल स्वाहा॥ ॐ श्री जूमा

घां कृष्णजहं वंहा ॥ ३३ ॥ कामिद्विप्रवरुनि स्वाहा ॥ ओं श्री प्रवक्षानी स्वाहा ॥ ओं श्री
निनिम स्वाहा ॥ ओं श्री नृम स्वाहा ॥ ओं श्री धिधिम स्वाहा ॥ ओं श्री धूधूम स्वाहा ॥
ओं श्री गनरम स्वाहा ॥ ओं श्री खख्व स्वाहा ॥ ओं श्री खखूम स्वाहा ॥ ओं गनर स्वाहा ॥
ओं श्री ताने कुमां रगवती वसुध्वाना नाम भानसि महान जावन लगु किं कनि स्वा
हा ॥ ओं श्री वज्र स्वाहा ॥ ओं श्री महावजापम स्वाहा ॥ ओं श्री आवर्हनी स्वाहा ॥ ओं श्री
प्रवर्हनी स्वाहा ॥ ओं श्री टर्क २ स्वाहा ॥ ओं श्री थर्क २ स्वाहा ॥ ओं श्री उर्क २ स्
ओं श्री रुर्क २ स्वाहा ॥ ओं श्री वूर्क २ स्वाहा ॥ ओं श्री वर्बसी स्वाहा ॥ ओं श्री प्रवव

हा ॥ ओं श्री निष्पादनि स्वाहा ॥ ओं श्री वज्रधनसागरतिर्घायाय तथा गताय सस्य
मनूस्मने स्वाहा ॥ ओं श्री सर्वतथागत सस्य मनूस्मने स्वाहा ॥ ओं श्री सर्ववृक्ष सस्य
मनूस्मने स्वाहा ॥ ओं श्री धर्म सस्य मनूस्मने स्वाहा ॥ ओं श्री संघ सस्य मनूस्
ने स्वाहा ॥ ओं श्री गुर्विणी मुखनप्रसूतनि महानंजा श्री स्वाहा ॥ ओं श्री महा भान
मनि स्वाहा ॥ ओं श्री महा पाष्टिमनि स्वाहा ॥ ओं श्री सर्वजवचाकनि स्वाहा ॥ ओं
श्री सर्वइष्टु निहृत्तनि स्वाहा ॥ ओं श्री सर्वभक्तु विनासनि हूं हूं स्वाहा ॥ ओं श्री
आगच्छा समयमनूस्मने स्वाहा ॥ २२ ॥ यनि पूनमा ॥ धनं का स्वा न वा य

गुह्यं हस्तं ॥ ओं श्री वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ओं श्री वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
 ओं श्री वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ओं श्री वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॥ धनं कुम्भ
 लवेन स उदका हस्तकम् ॥ पंचायतानपूजाया नमः ॥ स्तुति ॥ ॥
 ओं हगवति वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ तमासि गगमति मना ह ॥ माचनं निर्यग्य
 ति ॥ सुसतगुणतिधानं ॥ कांचनं नलदृक् ॥ वरुज न स्मृद्धि सागरं नलवर्ध ॥
 धनवति विषय ॥ ॥ ओं श्री वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ गुरुं श्वरं खाहि रदानप
 न् ॥ धर्मं गच्छि समुहानां ॥ अंति पूष्टं कुरु स्वाहा ॥ ॥ था कालिनं मंडल
 २ धनिधनं वा खं कतं ॥

धिलक ॥ सकसनं किननक ॥ स्तुति ॥ ॥ स्वंदी सर्वगुण सर्वनल म
 हातिधानं ॥ सत्कार्यकार्य धनधाम्य समृद्ध हना ॥ हाना र्द्ध हान ॥ मकुटा मलि
 कल्पवृक्षा ॥ तुला कनाथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ उत्सृष्ट नाग हय मृत् ॥ नन
 कदाया ॥ दानिदुःख माचन ॥ नाश मोषधिनां ॥ सो हा गनृषगुण पूष्य न स
 ॥ गुरुर्वर्ध ॥ सर्वददामि ॥ तव पादयुगं नमामि ॥ ॥ सना कुन ॥ कुमाप
 न ॥ ॥ धं लिपाथ गवय ॥ मधुल विसर्जन ॥ धर्म दनागु ॥ नरु मंडल न
 विसर्जन या नक ॥ ॥ शिल चंदन लिफांग ॥ वाधिपावन क्षा रुना ॥ वाक्ष

गङ्गासमाकिर्त्तु विनहर्षं यथासखं ॥ कृपावसर्वसत्त्वार्थं ॥ ॥
 वृत्तकानं ज्ञानक ॥ सिद्धं लय ॥ नरुडायाडा ॥ अर्घवागसंनयक ॥ ॥
 धर्मदत्तविधिसमाफ ॥ ॥ ॥ थलिसनिषत्तु वृत्तं न वलिपान
 १ गुन्मधुल समाधि देवपूजा मधुलपूजा धूतकाडा बाहुपूजा ॥ ॥ धन
 मूपनि गुन्मधुलदत्तक विसर्जन ॥ ॥ खकन ॥ ॥ जावंचजीवंच ध
 र्मनस सगवा जूहा गानमकं ॥ ॥ हनिष्यति जावत् गलाना ध
 लसा जिवनं वहलपगालं रुतसा अगुलि धर्मधनलधमालः मरुतसा

मूहागानकि अगुलि धर्मधनलपंजिडा ॥ ॥ अकायमानन धननगावत्
 शीवसुधानायां पूर्वकनातिरुच्यं ॥ ॥ हनेगाथधालसा हनिष्यति
 कायधाम वीउ वाकधाय वचन चिरुधाय नगल थुलिं डलिगनकाडा
 मेवनामलालयं नाग हंष कामकीध मत्यामाह गालगाडा थ शीवसुधा
 नादेवीयागु वरुधर्म धनलपाया पूर्वधन जूतक धनसंयलि संपरुह रुयूडा
 धक ॥ ॥ पाणि वरुपनिष्ठाग शिकाय समरुह रु नानाधर्म अर्तं अत्वा
 वत्सह वजगं वरु ॥ ॥ हनिष्य हनं खहडा प्रसिजन जिवाजं तु पतिस्था

यंमनडा चियंमनडा थडा नंगतिमडः थनगालताडा नानाधर्मयागु नानुन
 नहनं धर्मस नमरुय थगुलिवरुधर्म धनलपान जवस्यनं धनसंपहोडव
 आदिं लाडा धकं थारुगवानं आहृदयकलधकं थन नानाधर्मया
 रुस नमरुयानं दानिड तासन रुय प्रम्वालधकं हनं नानागानं कयुगु
 व्याधिनं पिउलय थनमरुधकं गुरुक्षेत्रिष्ययतिरु कनारुल ॥ ५
 थन कागवा जा जानकं बिष्वाधिवासनयाय थंलि वनका नायाडा पूजाया
 नकाडा वागासरुसं वनकासिहलसथूनाडा कलसलंखन निषालाहृन

सरुसं सापालं निषापियकाडा जूरुवागासं कालनक ॥ ० ॥ ७ ॥

